विकास उद्यम पूँजीवाद से क्या सीख सकता है?

Colin Bangay, पूर्व वरिष्ठ शिक्षा परामर्शदाता, DFID India, अभी British Council के उप-सहारन अफ्रीका के लिए शिक्षा और समाज निर्देशक

उद्यम पूंजीवादियों का लक्ष्य है उन संस्थानों को चुनना जिनके पास उत्तम विचार हैं, उनमें निवेश करना - उन्हें विकसित होने के लिए सहायता देना - यह सब उन्हें बाजार में 'स्पिन-ऑफ' करने और अपने निवेश पर अच्छा मुनाफा कमाने से पहले.

और, आरंभ से ही, यह धारणा TESS-India (जो कि OU की 'ओपन एक्सेस टीचर सपोर्ट' परियोजना है) के स्व-वित्तपोषित बनने के उद्देश्य के पीछे थी.

२०१२ में DFID से मिले प्रारंभिक मूलधन से 'प्रूफ-ऑफ़-कांसेप्ट' और 'मार्किट-एक्सेप्टेन्स' सिद्ध करने के लिए स्थापित, २०१६ तक इसे 'स्पिन-आउट' कर दिया गया था – UKAID की सहायता पर निर्भरता से स्वतंत्र रूप से वित्तपोषित पहल बन जाने तक, 'एंजेल' निवेशक 'सेव द चिल्ड्रेन' द्वारा और साथ ही साथ विभिन्न (निवेशकों), भारतीय राज्य सरकार से लेकर 'कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी' (सामाजिक ज़िम्मेदारी) (CSR) की पूंजी द्वारा.

TESS-India की वित्तीय स्वतंत्रता और दीर्घकालीन स्थिरता मूल में सही 'प्रोडक्ट लाइन्स' (उत्पादों) का नतीजा है, जो स्वीकार्य मूल्य पर दिए जाते हैं, और इस प्रकार कि उपभोक्ता उनका सुविधाजनक और सरल तरीके से उपयोग कर सकें.

हाल ही में, जब मैं इंटरनेट पर 'गोल्डन रूल्स फॉर वेंचर कॅपिटलिस्ट्स' (उद्यम पूंजीवादियों के लिए स्वर्ण सिद्धांत) के विषय में असंख्य लेख देख रहा था, मुझे लगा की ये TESS-India की यात्रा 'चार्ट' करने के लिए एक उपयोगी ढांचा पेश कर सकते हैं.

यह सुनिश्चित कीजिये कि आप किसी आवश्यकता को पूरा कर रहे हैं:

TESS-India के आरंभ में, भारत का विस्तार और जटिलता हमें कठिन चुनौतियां लगे.

प्राथमिक स्तर पर अप्रशिक्षित अध्यापकों और अध्यापक रिक्तियों का मिश्रित आंकड़ा दो मिलियन (ya २० लाख) तक पहुँच गए थे.

जूनियर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, गणित, और भाषा विषयों में बहुकालीन अभाव थे, जबकि केवल ७ प्रतिशत आवेदक 'नेशनल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट' को पूरा कर पाए थे.

इस पैमाने की चुनौती के लिए पारम्परिक महाविद्यालय-आधारित शिक्षक प्रशिक्षण और 'कास्केड प्रशिक्षण' से कुछ अधिक कि आवश्यकता थी: कुछ ऐसा जो भिन्न भी हो और सस्ता भी.

एक स्पष्ट कार्यनीति और व्यापार योजना रखिये:

'प्री-सर्विस' से जुड़े प्रमाणीकरण और उनसे जुडी समस्याओं से बचने के लिए, TESS-India ने शिक्षक प्रशिक्षण कि चुनौती को 'इन-सर्विस' सुलझाया.

यह युक्तियाँ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज को आकृति देने के लिए भारतीय विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं के साथ सहभागिक कार्य पर केंद्रित थीं, जो शिक्षकों को शिक्षार्थी-केंद्रित और रोचक कक्षा अध्यापन-शास्त्र में सहायता देते.

'प्राइस-पॉइंट' (कीमत बिंदुओं) पर विशेष ध्यान दिया गया: OU ने हिसाब लगाया कि पारम्परिक 'इन-सर्विस' परियोजनाओं की प्रति-व्यक्ति प्रति-वर्ष लागत £38 (या ३२०० रुपये) थी, जबकि TESS-India के लिए परियोजना के तीन वर्षों के दौरान हर इकाई की लागत £10 (या ८५० रुपये) से कम थी.

यथार्थ में, कई OU मॉड्यूल्स का बिना किसी शुल्क के ऑनलाइन दिए जाने का मतलब था कि इनमें से कई सरकारी 'प्री-सर्विस' शिक्षा परियोजनाओं में सम्मिलित कर लिए गए.

संक्षेप में, वायरल बन कर TESS-India की सामग्री 'प्री-सर्विस' प्रावधान में सम्मिलित हो गयी.

रिश्तों का निर्माण सुनिश्चित कीजिये:

विभिन्न चेहरों का एक प्रवाह - अक्सर बहुत दूर से आते हुए और थोड़े भिन्न नज़रिये के साथ - ये भ्रान्ति उत्पन्न कर सकते हैं.

समय के साथ TESS-India ने संपर्क के एकल बिंदु के महत्त्व को समझा: जो उपलब्ध हो, स्थानीय हो, और सुलभ हो.

विश्वसनीय रिश्ते जो स्पष्ट वार्तालाप को संभव बनाएं - जिसके पष्चात सभी दल आगे बढ़ पाएं - इन्हें जोड़ना सफलता का आधार है.

इंटरनेट-आधारित मध्यवर्तनों के साथ बड़ा खतरा यह है कि वे आपको दूरस्थ, 'टॉप-डाउन' दृष्टिकोण में खींच सकते हैं.

मगर, यह आप अपने जोखिम पर करें!

दीर्घकालीन सफलता स्थानीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था कि समझ पर आधारित है: केवल वही नहीं जो संभव है, पर आपको किस प्रकार काम करने कि ज़रुरत है और इसे संभव बनाने के लिए आप किसके साथ काम करेंगे.

यह जानिए कि कब अनुकूलन या छोड़ देने का समय आ गया - और वही कीजिये:

वर्तमान में अनुकूलित परियोजनाएं काफी प्रचलित हैं, पर कई बार अनुकूलन को तकनीकी नवोन्मेषण के पर्याय के रूप में देखा जाता है.

इ-लर्निंग में नवीनतम प्रौद्योगिकी के आकर्षण लुभावने होते हैं.

हालांकि सही मायने में TESS-India 'स्मार्ट' था उपयोगकर्ताओं कि आवश्यकताओं पर ध्यान देने में और इसके फलस्वरूप अपनी सामग्रियों को अनुकूल बनाने में.

उदाहरण के लिए, सारे संसाधन विभिन्न प्रारूपों में उपलब्ध थे, इनमें ऑनलाइन, डीवीडी, टैबलेट्स, पेन ड्राइव और माइक्रो-एस डी (जिनमें संसाधनों को छोटे स्क्रीन के उपयुक्त बनाया जाता है) शामिल थे.

बेशक नवोन्मेषण मौजूद था – Raspberry Pi कंप्यूटर को कम लागत वाले 'वर्चुअल नेट्स' बनाने के उपयोग में लाया गया था - पर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि TESS-India ने उन इलाकों के लिए (सामग्री) छपवाना नहीं भूला, जहाँ तकनीकी तक पहुँच कम या न के बराबर है, या उन शिक्षकों के लिए, जिनके लिए पुराने मीडिया ज़्यादा सुगम हैं.

ज़िम्मेदार और उत्तरदायी बने रहिये:

निवेशक मुनाफे कीअपेक्षा रखते हैं.

एक बात जो प्रारंभिक दिनों में OU को सुलझानी पड़ी, वह यह ग्रहणबोध था कि यह 'उनकी' परियोजना है.

हालांकि, जब आप निवेश स्वीकार करते हैं तो आप अपने निवेशकों के प्रति उत्तरदायी बन जाते हैं, इस ज़िम्मेदारी के साथ कि आप अपने दिए गए वचन निभाएंगे.

मैं प्रसन्न हूँ कि इस क्षेत्र में TESS-India और बेहतर हुआ है - उसके प्रभावशाली सहभागियों का समूह इस बात को प्रामाणित करता है.

हितधारकों का प्रबंधन - जो इतने प्रकार से अपना योगदान देते हैं, पूँजी निवेश से लेकर 'इंटेलेक्चुअल कंटेंट' (बौद्धिक सम्पदा) तक - बहुत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर सहभागिक उद्यमों के लिए.

मुख्य सफलताओं जैसे Mpesa 'मोबाइल मनी' के बावजूद, विकास की उन परियोजनाओं के उदाहरण, जो 'ऑफिशल डेवलपमेंट असिस्टेंस' (ODA) पर निर्भरता से आत्मनिर्भर उद्यमों तक पहुंचीं, कुछ गिने-चुने ही हैं.

फिर भी, विकास के लिए स्थिरता और non-ODA वित्तपोषण के पारस्परिक मुद्दों पर बढ़ते ध्यान के साथ यह क्षेत्र निश्चय ही अन्वेषण के लिए तैयार है, और TESS-India एक रोचक 'केस स्टडी' पेश करता है.

इसकी सफलता के अवयव, व्यापार के अवयवों के समरूप प्रतीत होते हैं: स्पष्ट लक्ष्य, स्मार्ट कार्यनीति और एक परिभाषित निवेश क्षितिज.

इन्हें सुनिश्चित करने के लिए, आप अपना अनुसंधान कीजिये और अपने 'नंबर्स' जानिए, अपने ग्राहकों को जानिए और प्रतिक्रियाओं पर कार्य करते हुए विश्वसनीयता बनाइये.